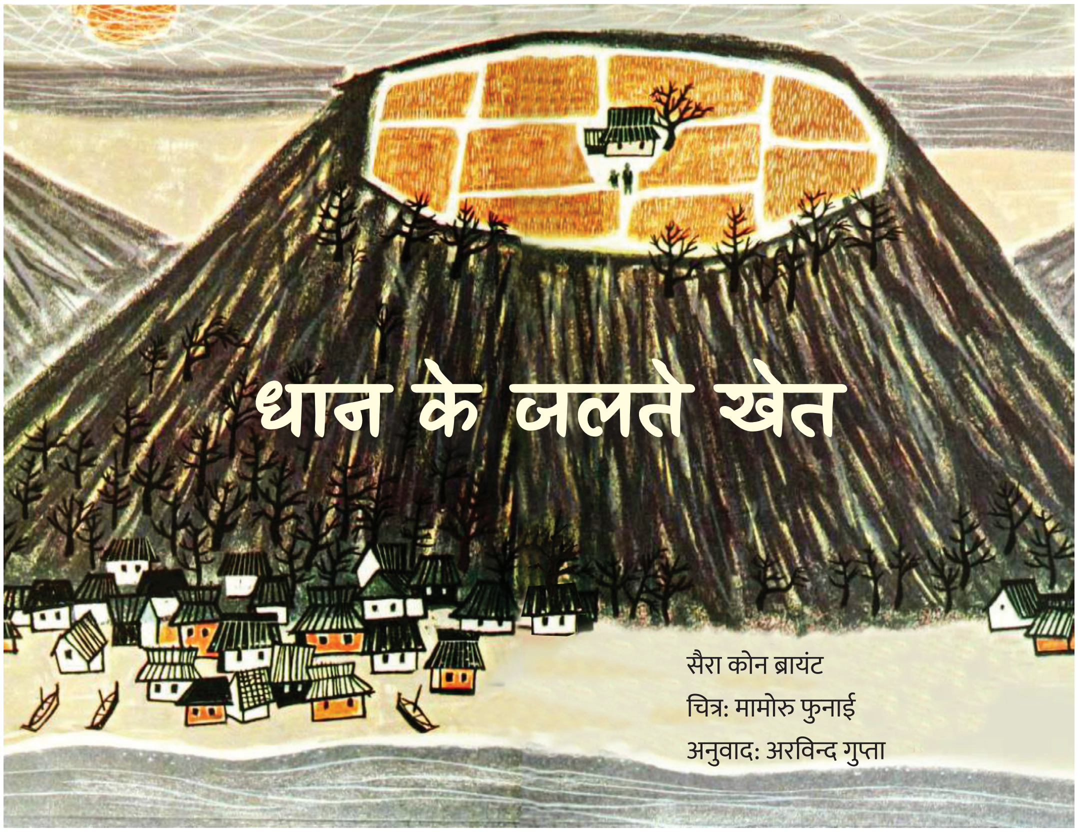
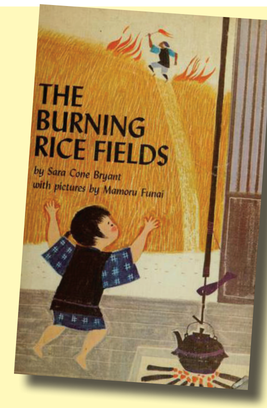
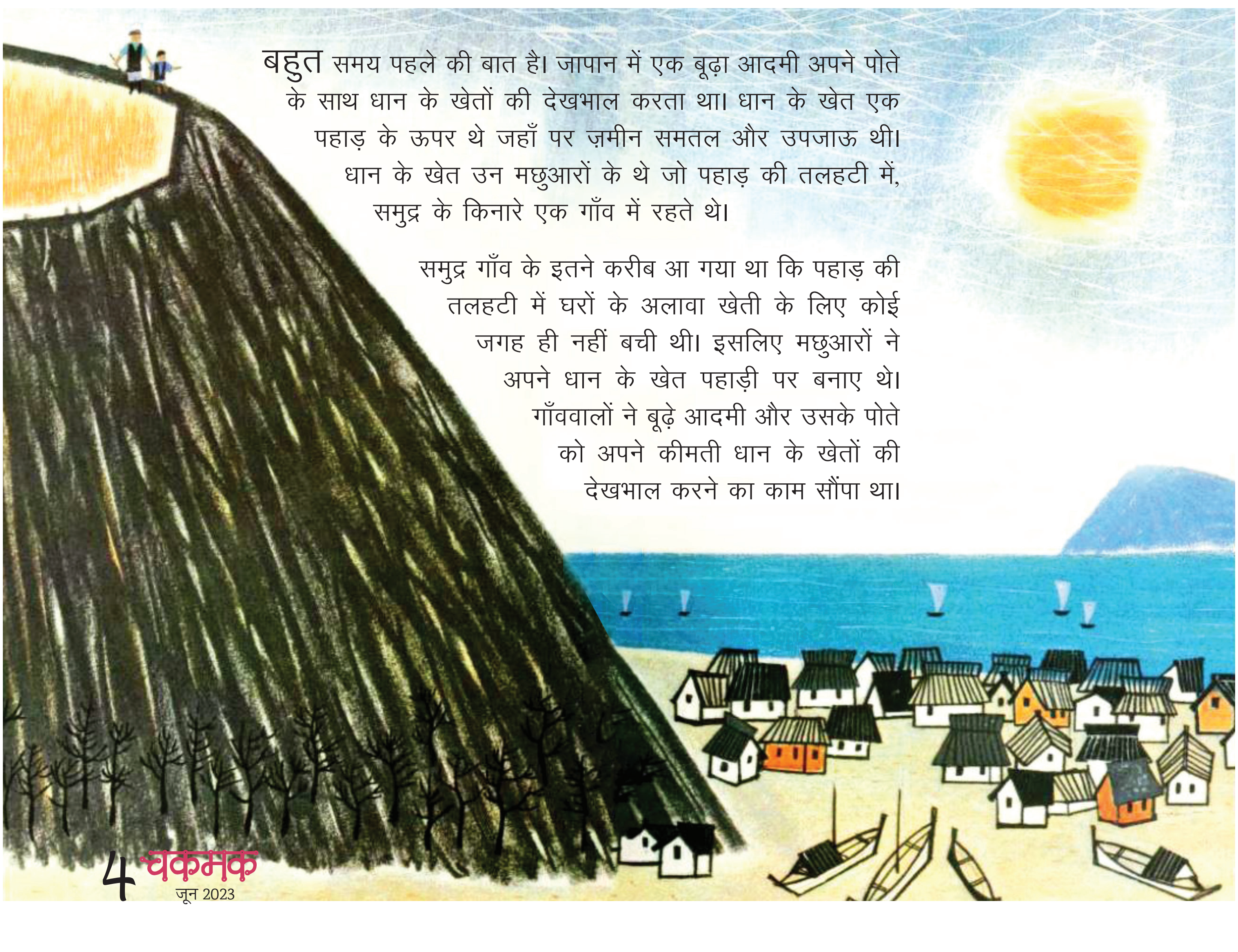


धान के जलते खेत

सैरा कोन ब्रायंट
चित्र: मामोरु फुनाई
अनुवाद: अरविन्द गुप्ता



1854 की एक वास्तविक घटना पर आधारित इस कहानी को यूनानी-जापानी लेखक, अनुवादक और शिक्षक पैट्रिक लाफकाडियो हर्न ने अपनी किताब *ग्लीनिंग्स इन बुद्धा फील्ड्स* में शामिल किया। अमरीकी शिक्षक और बच्चों की कहानियों की लेखक सैरा कोन ब्रायंट ने इसका पुनर्लेखन किया। बच्चों को कहानी सुनाने के महत्व पर लिखी अपनी एक किताब में उन्होंने इसे दिया। ये सन 1918 की बात है। उसके बाद इसकी चित्रकथा बनी।



बहुत समय पहले की बात है। जापान में एक बूढ़ा आदमी अपने पोते के साथ धान के खेतों की देखभाल करता था। धान के खेत एक पहाड़ के ऊपर थे जहाँ पर ज़मीन समतल और उपजाऊ थी। धान के खेत उन मछुआरों के थे जो पहाड़ की तलहटी में, समुद्र के किनारे एक गाँव में रहते थे।

समुद्र गाँव के इतने करीब आ गया था कि पहाड़ की तलहटी में घरों के अलावा खेती के लिए कोई जगह ही नहीं बची थी। इसलिए मछुआरों ने अपने धान के खेत पहाड़ी पर बनाए थे। गाँववालों ने बूढ़े आदमी और उसके पोते को अपने कीमती धान के खेतों की देखभाल करने का काम सौंपा था।



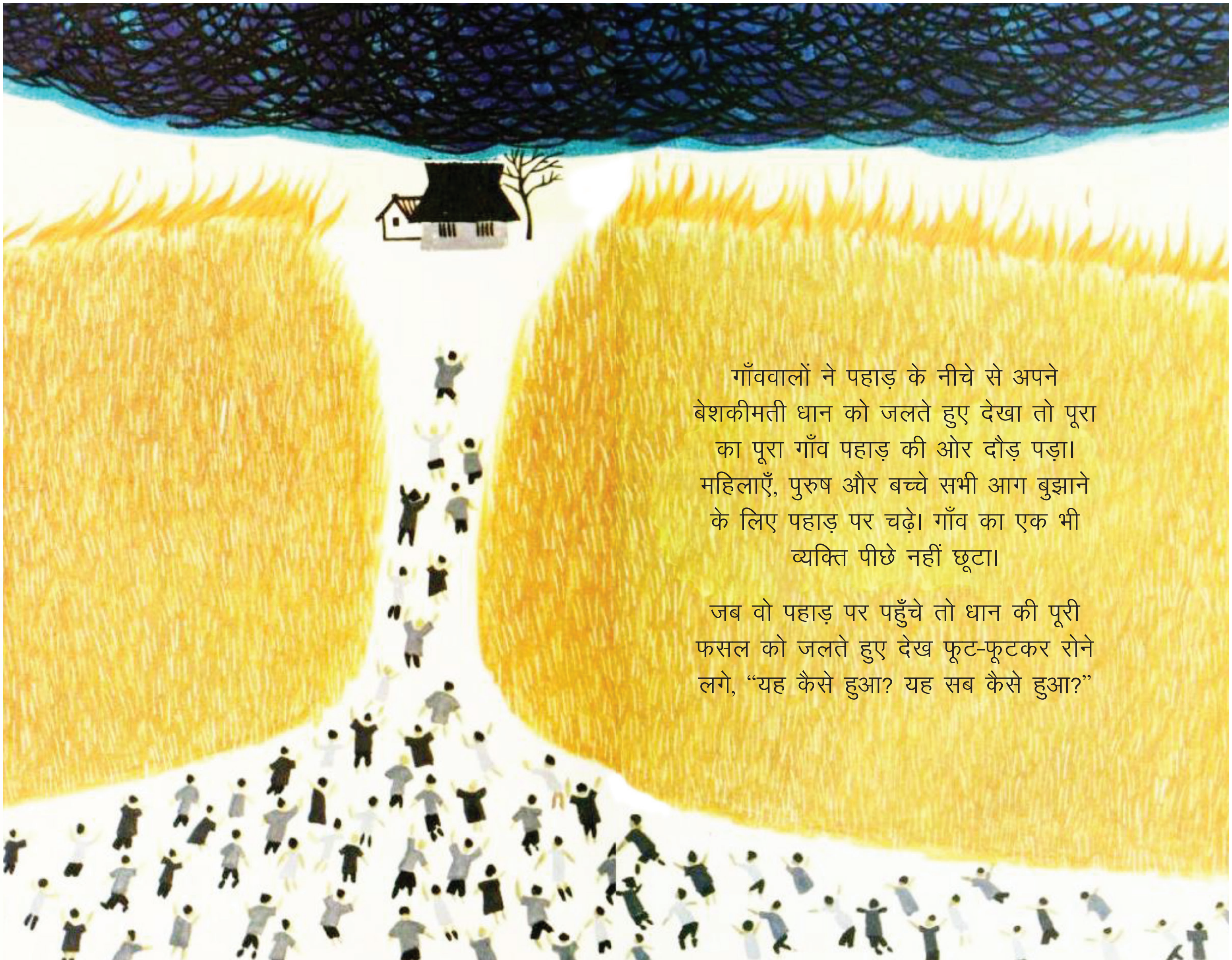
एक दिन जब बूढ़े आदमी ने समुद्र की ओर देखा, तो उसे कुछ ऐसा दिखाई दिया जिसे देख वो इतना डर गया कि रो पड़ा। उसने अपनी आँखें मलीं और फिर से देखा। फिर उसने अपने पोते से चिल्लाकर कहा, “भागो! जल्दी घर जाओ और मेरे लिए एक जलती हुई लकड़ी लेकर आओ!”

लड़के ने पहले कभी भी अपने दादाजी को इतनी तेज़ आवाज़ में बोलते हुए नहीं सुना था। इसलिए वो भी बहुत डर गया। वो तुरन्त घर की ओर दौड़ा। और उसने चूल्हे में से एक जलती हुई लकड़ी निकाली। जब वो वापिस लौटा तो बूढ़ा आदमी उस जलती लकड़ी को हाथ में पकड़कर पके, सूखे धान के पौधों में आग लगाता हुआ खेतों के बीच भागने लगा।



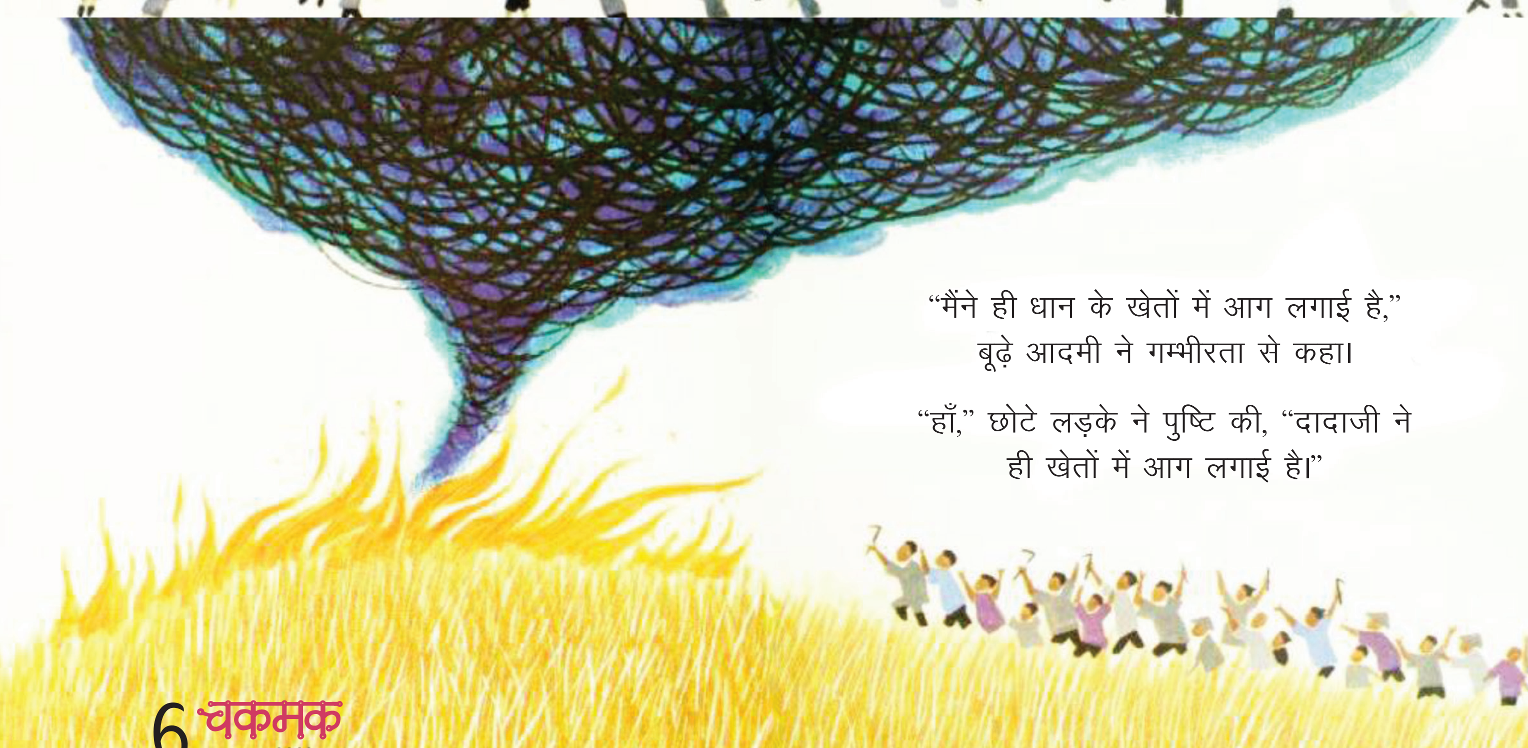
कुछ ही मिनटों में धान के खेत धू-धू करके जलने लगे। आग की कड़कड़ाती लपटों से सूखे धान के पौधे जलकर खाक हो गए। पहाड़ से भयंकर काला धुआँ ऊपर उठने लगा।

“दादाजी... दादाजी,” छोटा लड़का रोते हुए चिल्लाया, “आप यह क्या कर रहे हैं? रुक जाइए, दादाजी, कृपया रुक जाइए।”



गाँववालों ने पहाड़ के नीचे से अपने बेशकीमती धान को जलते हुए देखा तो पूरा का पूरा गाँव पहाड़ की ओर दौड़ पड़ा। महिलाएँ, पुरुष और बच्चे सभी आग बुझाने के लिए पहाड़ पर चढ़े। गाँव का एक भी व्यक्ति पीछे नहीं छूटा।

जब वो पहाड़ पर पहुँचे तो धान की पूरी फसल को जलते हुए देख फूट-फूटकर रोने लगे, “यह कैसे हुआ? यह सब कैसे हुआ?”



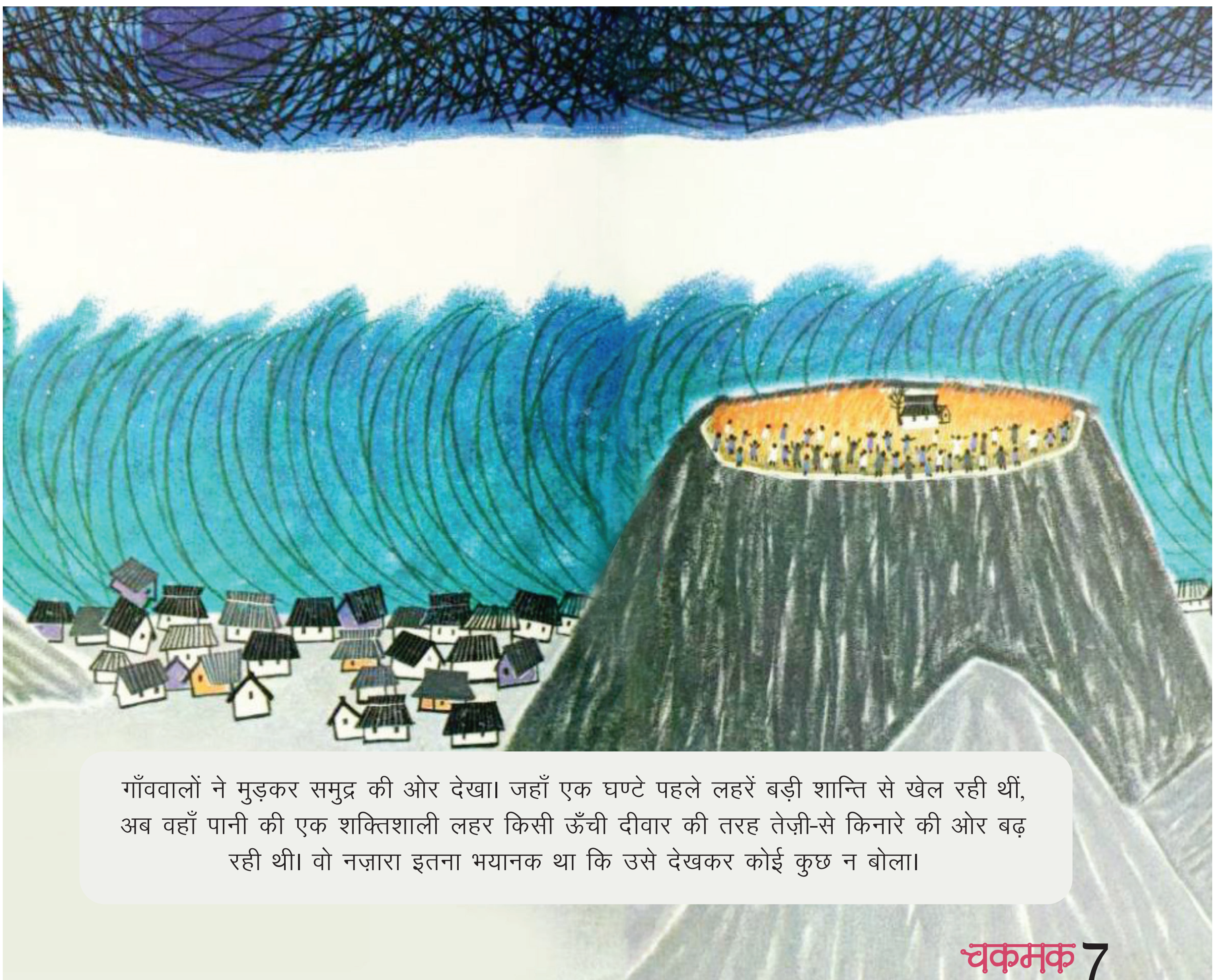
“मैंने ही धान के खेतों में आग लगाई है,” बूढ़े आदमी ने गम्भीरता से कहा।

“हाँ,” छोटे लड़के ने पुष्टि की, “दादाजी ने ही खेतों में आग लगाई है।”

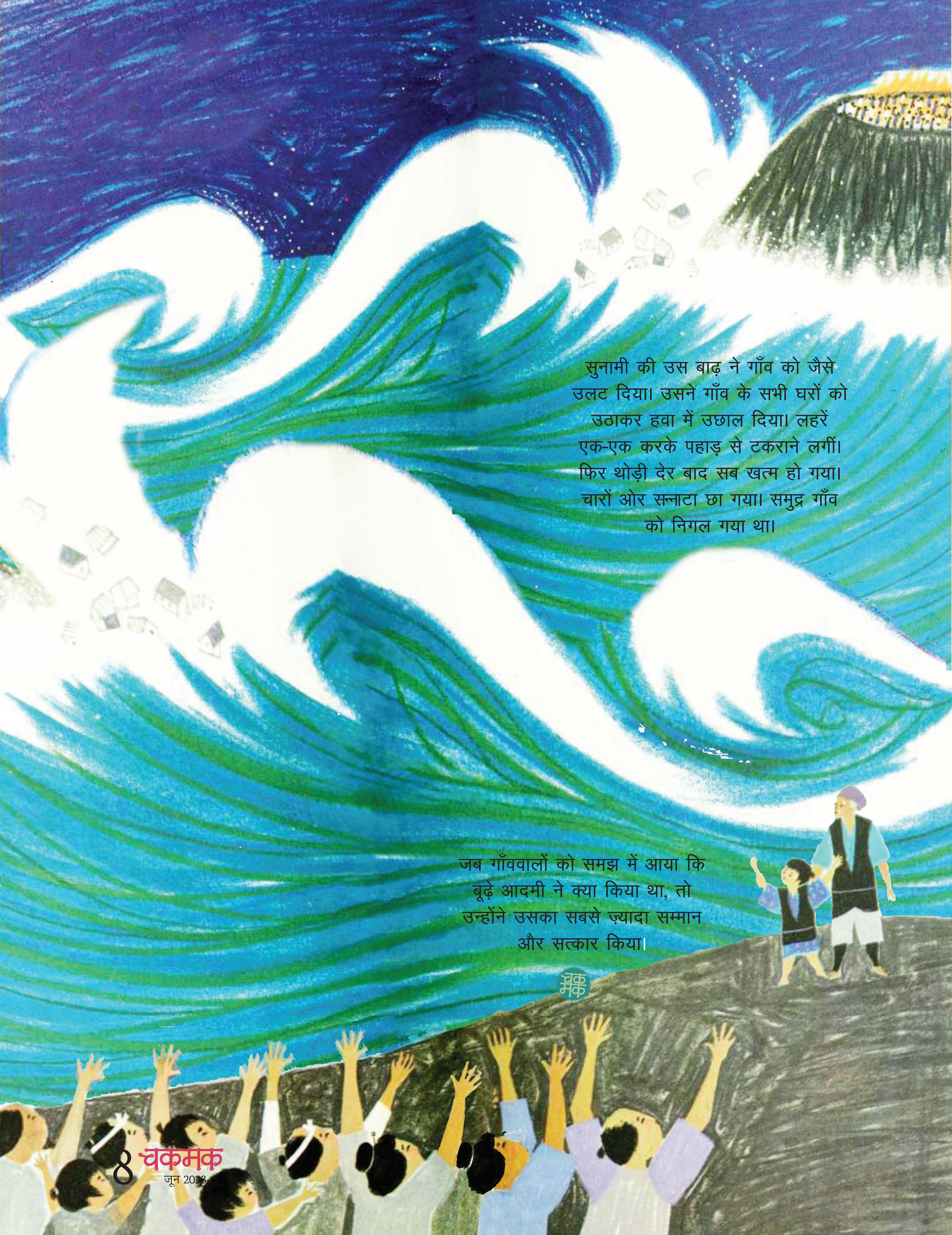


यह सुनकर गाँववाले आगबबूला हो गए। फिर बूढ़े आदमी के चारों ओर लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई। वे चिल्लाने लगे, "क्यों? बताओ तुमने ऐसा क्यों किया?"

बूढ़ा आदमी शान्त रहा। "उधर देखो!" उसने समुद्र की ओर इशारा करते हुए कहा।



गाँववालों ने मुड़कर समुद्र की ओर देखा। जहाँ एक घण्टे पहले लहरें बड़ी शान्ति से खेल रही थीं, अब वहाँ पानी की एक शक्तिशाली लहर किसी ऊँची दीवार की तरह तेज़ी-से किनारे की ओर बढ़ रही थी। वो नज़ारा इतना भयानक था कि उसे देखकर कोई कुछ न बोला।



सुनामी की उस बाढ़ ने गाँव को जैसे उलट दिया। उसने गाँव के सभी घरों को उठाकर हवा में उछाल दिया। लहरें एक-एक करके पहाड़ से टकराने लगीं। फिर थोड़ी देर बाद सब खत्म हो गया। चारों ओर सन्नाटा छा गया। समुद्र गाँव को निगल गया था।

जब गाँववालों को समझ में आया कि बूढ़े आदमी ने क्या किया था, तो उन्होंने उसका सबसे ज़्यादा सम्मान और सत्कार किया।